तथ्यों को लिखें ?

उत्तर :→ समूह छोटा हो या बड़ा, सभी की अपनी संरचना होती है। समूह की संरचना का निर्माण समूह के सदस्यों की संख्या, उसकी व्यक्तिगत प्रभावशीलता, उसके सम्बन्धों की प्रकृति तथा पारस्परिक संचार की प्रकृति से होता है। संरचना के अनुरूप ही सदस्य प्रभावित होते हैं। समूह की संरचना में जब भी परिवर्तन होता है तो इसके सदस्यों के व्यवहारों में भी परिवर्तन होता है। किसी भी समूह की संरचना निम्नांकित तथ्यों पर आधारित होती है :—

① समूह का आकार :→ समूह के सदस्यों की संख्या के आधार पर ही समूह को बड़ा या छोटा समूह समझा जा सकता है। समूह यदि दो-चार सदस्यों का हो तो ~~वहाँ~~ उनके बीच प्रत्यक्ष एवं घनिष्ठ अर्थात् प्राथमिक सम्बन्ध पाये जाते हैं और उनके आपस का सम्बन्ध भी घनिष्ठ होने के कारण उनकी अन्तःक्रियाएँ भी सरल प्रकृति की होती है। छोटे आकार के समूह में परिवार, मित्र-मण्डली आदि ज्वलन्त उदाहरण हैं। एक परिवार के सदस्यों में प्रत्यक्ष सम्बन्ध पाया जाता है और उनके बीच निष्ठा, सहयोग एवं निःस्वार्थ की भावना पायी जाती है। खेल के साथियों में भी इसी प्रकार के सम्बन्ध पाये जाते हैं। छोटे आकार के समूह के बारे में रोजेनबर्ग एवं टर्नर (1981) का कहना है कि "छोटे आकार के समूह का अर्थ उस समूह से है जिसमें सदस्यों के बीच प्रत्यक्ष अन्तर्क्रिया होती है, उनके बीच प्रत्यक्ष वार्तालाप एवं एक-दूसरे की प्रत्यक्ष जानकारी होती है तथा समूह के प्रति उनमें निष्ठा की भावना पायी जाती है।

कुछ समूह ऐसे भी होते हैं जिनके सदस्यों की संख्या प्रारंभ में तो कम होती है, लेकिन जैसे-जैसे समूह के सदस्यों की संख्या बढ़ती जाती है वैसे-वैसे इसका आकार जटिल होता जाता है और परस्पर सम्बन्धों में भी जटिलता आ जाती है। समूह की विशालता के कारण सदस्यों के बीच अप्रत्यक्ष सम्बन्ध पाया जाता है तथा सम्बन्ध औपचारिक होते हैं। आन्तरिक एकता के कारण छोटे समूह में तनाव एवं संघर्ष कम पाया जाता है। दोनों समूहों में सम्बन्धों की भिन्नता के बावजूद

दोनों समूहों की संरचना को एक ही माना जाता है। इसमें कोई विभाजक रेखा नहीं है।

(2) समूह के सम्बन्ध :→ छोटे समूह के सदस्यों में प्रत्यक्ष एवं बड़े समूह के सदस्यों में अप्रत्यक्ष सम्बन्ध पाया जाता है। अधिक सदस्यों वाले समूह में आपस में प्रतिस्पर्द्धा एवं तनाव होने के कारण समूह अनेक उपसमूहों में विभाजित हो जाते हैं। कुछ विद्वानों द्वारा इस प्रकार के समूह के सम्बन्धों को दो भागों में बाँटा गया है — उदग्र सम्बन्ध (Vertical relations), एवं क्षैतिज सम्बन्ध (Horizontal relations)। बड़े समूहों में उदग्र सम्बन्धों का विकास होता है जबकि छोटे समूहों में क्षैतिज सम्बन्धों का, क्योंकि बड़े समूहों में अधिक सदस्य होते हैं एवं उनके बीच एक संस्तरण पाया जाता है। मोरेनो (J.L. Moreno) ने समूह सम्बन्धों को तीन भागों में बाँटा है — युग्म सम्बन्ध (Pair relations), त्रिकोणीय सम्बन्ध (Triangular relations), तथा चेन सम्बन्ध (Chain relations) युग्म और त्रिकोणीय सम्बन्ध छोटे समूह में तथा चेन सम्बन्ध बड़े समूहों में पाये जाते हैं। इस तरह समूह की संरचना पर सदस्यों के सम्बन्ध, व्यवसाय, आयु, सामाजिक स्तर आदि का भी प्रभाव पड़ता है।

(3) प्रस्थिति (Status) :— समूह की संरचना पर प्रस्थिति के संस्तरण का भी प्रभाव पड़ता है। बहुत से समूह ऐसे होते हैं जिनके सदस्यों में स्पष्ट संस्तरण पाया जाता है; जैसे— कारखाना, राजनैतिक दल इत्यादि। इसमें कुछ सदस्य ऊँचे पद पर आसीन होते हैं और कुछ निम्न पद पर तथा ऊपर से नीचे तक एक संस्तरण पाया जाता है। और सदस्यों के अधिकार एवं कर्तव्य भी निश्चित होते हैं। किसी भी समूह में इस प्रकार के क्रिया-कलाप को देखकर यह अनुमान लगाना आसान हो जाता है कि वह समूह छोटे आकार का है या बड़े आकार का। उसके सम्बन्ध औपचारिक हैं या अनौपचारिक।

(4) संचार का स्वरूप :→ संचार का तात्पर्य है :- अपने-अपने विचारों को एक-दूसरे को सम्प्रेषित करना या विभिन्न माध्यमों द्वारा सूचनाएँ प्राप्त करना। सरल या छोटे आकार के समूह में संचार व्यवस्था या तो मौखिक होती है या फिर औपचारिक, जबकि बड़े समूह में संचार की प्रकृति अप्रत्यक्ष, औपचारिक तथा लिखित होती है। अतः स्पष्ट है कि संचार

के स्वरूप के अनुसार ही समूह की संरचना को एक विशेष स्वरूप प्राप्त होता है।

(5) विभिन्न समूहों के बीच अन्तर्सम्बन्ध :— जिस प्रकार से समूह के सदस्यों के बीच अन्तर्सम्बन्ध होता है और कार्यात्मक सम्बन्ध बना होता है उसी तरह अलग-अलग समूह भी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। जैसे-जैसे अन्य समूहों से सम्बन्ध एवं अन्तर्क्रिया बढ़ती जाती है उसका रूप और भी जटिल एवं व्यापक होता जाता है। छोटे समूह दूसरे समूहों पर बहुत कम निर्भर होते हैं अर्थात् ये आत्मनिर्भर होते हैं। विद्वानों का मत है कि जैसे-जैसे किसी समूह का सामाजिक सन्दर्भ बढ़ने लगता है; व्यक्ति पर समूह का दबाव कम होने लगता है तथा समूह का अन्य समूहों से स्थापित होने वाला सम्बन्ध समूह की संरचना को पहले से अधिक जटिल बनाता है और इसके फलस्वरूप व्यक्ति को व्यवहार के इतने विकल्प मिलने लगते हैं कि वह अधिक स्वतंत्रता अनुभव करने लगता है।

(6) समूह की प्रभावशीलता :→ जिन समूहों का अपने सदस्यों पर व्यापक प्रभाव देखा जाता है; वे समूह सरल एवं परम्परागत होने के बावजूद अपनी प्रकृति से निरंकुश होते हैं। ऐसे समूह में सदस्यों की प्रस्थिति प्रदत्त होती है; लेकिन इस प्रकार की सदस्यता में प्रायः व्यक्तित्व का विकास कुण्ठित हो जाता है। लेकिन बहुत सारे समूहों में उसकी प्रभावशीलता सदस्यों पर अधिक होने के बावजूद सम्बन्ध उदार एवं ~~संरच~~ संरचना परिवर्तनशील होती है। ऐसे समूह व्यक्तिगत स्वतंत्रता को मान्यता देते हैं। अतः यही कारण है कि इनके आपसी सम्बन्ध प्रत्यक्ष एवं अंतरंग होते हैं।

उपरोक्त वर्णित समूह की संरचना से ही समूह की प्रकृति के बारे में जानकारी ली जा सकती है। शेरिफ के शब्दों में, "व्यापक रूप से समूह संरचना का सम्बन्ध व्यक्तियों के (~~स्थिति~~ प्रस्थिति एवं कार्य भूमिका) के अन्तर्निर्भर सम्बन्धों की न्यूनाधिक स्थिर प्रणाली से होता है। ये सम्बन्ध उन व्यक्तियों द्वारा सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति में दिये जाने वाले योगदान के अनुरूप होते हैं। ये सम्बन्ध अन्तर्निर्भर तथा आदान-प्रदानात्मक होते हैं और वे एक निश्चित तरीके

Scanned with OKEN Scanner

से एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्तियों से सम्बद्ध करते हैं। कार्यों समस्याओं अथवा परस्पर प्रक्रिया में महत्वपूर्ण लक्ष्यों से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों में व्यक्तियों के विभिन्न योगदानों के रूप में प्रत्येक सदस्य के लिए अन्य सदस्यों से सम्बन्धित पारस्परिक प्रत्याशाएँ स्थिर होती हैं। समूह के व्यवहार के लिए ये स्थिर प्रत्याशाएँ समूह के सदस्यों की भूमिकाओं को स्पष्ट करती हैं।

Sinha